अमर उजाला

नई दिल्ली । शुक्रवार, 19 अप्रैल 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना वर्ष : 1948

हमें एक मजबूत अर्थव्यवस्था की जरुरत है, जो रोजगार के अवसर पैदा कर सके...
- बॉब मेनेंडेज

अमेरिकी राजनेता

आर्थिक रूप से दिवालिया होने के कगार पर खड़ी जेट एयरवेज को जिस तरह से अपनी सारी उड़ानें रद्द करनी पड़ी हैं, उससे साफ है कि भारत का विमानन उद्योग गंभीर संकट से गुजर रहा है और उसने किंगफिशर कंपनी के बंद होने के बाद कोई सबक नहीं सीखा।

जमीन पर जेट

अंततः निजी हवाई कंपनी जेट एयरवेज का वही हश्र हुआ, जिसका अंदेशा कई महीने से था। भयंकर आर्थिक संकट से गुजर रही इस कंपनी ने सारे विकल्प तलाशने के बाद आखिरकार मंगलवार को अपनी सारी उड़ानें रद्द कर दीं। एक समय देश की सबसे बड़ी निजी विमानन कंपनी रही जेट एयरवेज की यह हालत बताती है कि देश का विमानन उद्योग किस संकट से गुजर रहा है। कंपनी पर आर्थिक बोझ के साथ ही कर्जदाता बैंकों का दबाव भी बढ़ता जा रहा था, जिसके चलते उसके मालिक नरेश गोयल को कंपनी के बोर्ड से अलग होना पड़ा था। कंपनी को ईंधन और जरूरी खर्चों के लिए तात्कालिक रूप से 1,500 करोड़ रुपये की जरूरत थी, मगर स्टेट बैंक की अगुआई वाले कर्जदाताओं के समूह ने भीतर से पूरी तरह से जर्जर हो चुकी इस कंपनी पर भरोसा नहीं किया, तो इसके पीछे की वजह समझी जा सकती है। सवाल है कि एक समय जो कंपनी बाजार पूंजीकरण के लिहाज से देश की सबसे बड़ी एयरलाइंस कंपनी बन गई थी, वह दिवालिया होने के कगार पर कैसे आ गई! जबकि हाल के वर्षों में भारतीय नागरिक उड्डयन क्षेत्र ने दो अंकों में वृद्धि दर्ज की है और भारत को इस मामले में संभावनाओं वाले देश के रूप में भी देखा जाता रहा है। दरअसल सस्ती विमान सेवाओं के शुरू होने के बाद पिछले एक-डेढ़ दशक के दौरान विमान यात्रियों का एक नया वर्ग भी तैयार हुआ। इसके बावजूद विमानन कंपनियां आर्थिक रूप से कमजोर हो रही थीं, तो कहीं न कहीं यह नीयत और नियंत्रण, दोनों का मामला है। हैरानी की बात यह है कि 2012 में ऐसे ही हालात में विजय माल्या की किंगफिशर एयरलाइंस बंद हो गई थी, इसके बावजूद कोई सबक नहीं लिया गया। जेट एयरवेज की उड़ानें रद्द करने का असर विमान यात्रियों पर तो पड़ ही रहा है, इसकी वजह से कंपनी के तकरीबन 20,000 कर्मचारी सड़क पर आ गए हैं। दूसरी ओर जेट की उड़ानें रद्द होने से अचानक विमानन क्षेत्र में मांग और आपूर्ति का संतुलन बिगड़ गया है, जिसका असर हवाई यात्रा पर दिखने लगा है। सरकार को देखना चाहिए कि चुनावी आचार संहिता के बीच वह इस संकट को दूर करने में किस तरह से हस्तक्षेप कर सकती है। यह मुद्दा सिर्फ एक कंपनी और उसके कर्मचारियों के हितों से ही नहीं जुड़ा है, बल्कि इसका संबंध विमानन क्षेत्र के निवेशकों के विश्वास से भी है।

कृषि क्षेत्र से ही पैदा होगा रोजगार

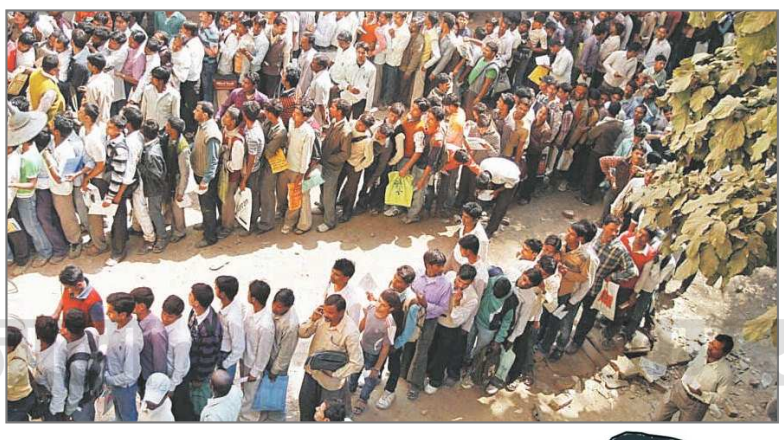

हमारे यहां के अर्थशास्त्री अब भी ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों के शहरी इलाकों में जाने को अच्छा मानते हैं, जबकि चीन ने शहरों से गांव जाने को प्राथमिकता में रखा है। भारत में अकेला कृषि क्षेत्र अर्थव्यवस्था को पटरी पर ला सकता है।

देविंदर शर्मा, कृषि नीति विशेषज्ञ

इसी महीने रेलवे भर्ती बोर्ड ने टाइपिस्ट, स्टेनो, एकाउंट क्लर्क, टिकट कलेक्टर आदि के 35,000 पदों के लिए 1.6 करोड़ आवेदन प्राप्त किए। पंजाब में छह लाख से अधिक छात्रों ने इंटरनेशनल इंगलिश लैंग्वेज टेस्टिंग सिस्टम (आईईएलटीएस) में भाग लिया। यह ऐसी परीक्षा है, जिसे विदेश जाने के इच्छुक छात्रों को पहले पास करना होता है। विदेश जाने की ऐसी लालसा है कि आईईएलटीएस कोचिंग एक बड़ा व्यवसाय बन गई है, जिसका कारोबार अनुमानित रूप से 1,100 करोड़ रुपये से अधिक है। खेती के आर्थिक रूप से गैर-लाभकारी होने और रोजगार की कोई संभावना न होने के कारण पंजाब के युवा तेजी से देश छोड़ने के इच्छुक हैं।

अगर आप देश में बढ़ती बेरोजगारी के दीर्घकालीन प्रभाव से परेशान हैं, तो आपको एक और झटका लग सकता है। बंगलूरू स्थित अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय ने अपने स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया-2019 की रिपोर्ट में कहा है कि वर्ष 2016 से 2018 के बीच 50 लाख लोगों को अपनी नौकरी खोनी पड़ी है। एक महीने पहले नेशनल सैंपल सर्वे ऑफिस की पिरियोडिक लेबर फोर्स सर्विस 2017-18 की रिपोर्ट ने बताया कि 2011-12 से 2017-18 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में 3.2 करोड़ अनियमित श्रमिकों ने अपना रोजगार खोया। इनमें से मोटे तौर पर तीन करोड़ कृषि श्रमिक थे, यह कृषि श्रमिकों के लिए रोजगार की उपलब्धता में 40 प्रतिशत की गिरावट दिखाती है। कुछ अर्थशास्त्रियों ने इस रिपोर्ट का विश्लेषण करने पर पाया है कि 2011-12 से 2015-16 के बीच अकेले विनिर्माण के क्षेत्र में रोजगार 580.6 लाख से घटकर 480.3 लाख रह गया, जो एक करोड़ से ज्यादा रोजगार के नुकसान को दर्शाता है।

अकुशल से लेकर कुशल, अशिक्षित से लेकर शिक्षित और यहां तक कि उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों के लिए रोजगार के अवसर सिमट रहे हैं। उत्तर प्रदेश में 3,700 डॉक्टरेट डिग्रीधारी, 28,000 पोस्ट ग्रेजुएट और 50,000 ग्रेजुएट ने चापरासी के मात्र 62 पदों के लिए आवेदन किया। इस नौकरी के लिए मूलतः न्यूनतम पांचवीं क्लास उत्तीर्ण और साइकिल चलाने की योग्यता होनी चाहिए। यह पहली बार नहीं है कि उच्च शिक्षित लोगों ने ऐसी छोटी नौकरी के लिए आवेदन किए हैं। इसलिए हैरानी नहीं कि अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के अध्ययन ने दिखाया है कि उच्च शिक्षित, कम शिक्षित के साथ-साथ अनियोजित कार्यबल के लिए बेरोजगारी बढ़ी है और 2016 के बाद से रोजगार घटे हैं, जिस वर्ष नोटबंदी की घोषणा की गई थी।

जब शहरी क्षेत्रों में भारी बेरोजगारी व्याप्त है, तब कृषि क्षेत्र में भी श्रमिकों की संख्या 2004-05 से 2011-12 के बीच घटी है। मुख्यधारा के अर्थशास्त्री रोजगार के इस नुकसान को उज्ज्वल पक्ष के रूप में देख रहे हैं। उनका तर्क है कि शहरी क्षेत्रों में कृषि श्रमिकों का पलायन आर्थिक विकास का सूचक है और यह पहली बार है कि लोगों के गांव से पलायन करने को स्पष्ट रूप से देखा गया है। अपने पूर्ववर्ती की तरह नए मुख्य आर्थिक सलाहकार कृष्णमूर्ति सुब्रमण्यन ने भी लोगों से कृषि क्षेत्र से शहरी क्षेत्रों में आने का आह्वान किया है, जिन्हें सस्ते श्रम की आवश्यकता है।

मुझे यह तर्क प्रतिगामी लगता है। यह उसी दोषपूर्ण सोच से आता है, जिसे इन वर्षों में विश्व बैंक/अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा प्रचारित किया जाता रहा है। चूंकि भारतीय अर्थशास्त्री और उच्च पदों पर काबिज ज्यादातर लोगों ने विदेशों में पढ़ाई की है, इसलिए यह दोषपूर्ण सोच अलिखित नीति बन गई है। वर्ष 1996 में विश्व बैंक ने भारत को अगले बीस साल में ग्रामीण क्षेत्रों से 40 करोड़ लोगों को शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरित करने का निर्देश दिया था। हाल ही में राष्ट्रीय कौशल विकास नीति दस्तावेज ने वर्ष 2022 तक ग्रामीण कार्यबल को 57 फीसदी से घटाकर 38 प्रतिशत करने का वादा किया। यह इस सोच पर आधारित था कि शहरी क्षेत्रों को दिहाड़ी मजदूरों की जरूरत है और वे केवल कृषि क्षेत्र से आ सकते हैं।

यह उधार के आर्थिक नुस्खे को आंख मूंदकर लागू करने का एक दुखद प्रतिबिंब है। जिस देश में अब भी 70 फीसदी कार्यबल ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है, वहां एक बड़ी आबादी का शहरों में झुंड बनाकर काम की तलाश में भटकने की कल्पना भी क्षुब्ध करने वाली है। मुझे हमेशा हैरानी होती है कि हमारे अर्थशास्त्री और नीति निर्माता कृषि नीति को लाभदायक बनाने के लिए अपनी नीतियों में बदलाव क्यों नहीं करते? इस तरह ग्रामीण उद्योग को पुनर्जीवित किया जा सकता है। अगर ग्रामीण कार्यबल के हाथ में अधिक पैसा होगा, तो अधिक मांग पैदा होगी, जिससे आर्थिक विकास के पहिये तेजी से घूमेंगे।

भारतीय अर्थशास्त्री विश्व बैंक की सोच से बाहर निकलने में विफल रहे, जबकि चीन ने बेरोजगार श्रम बल का ध्यान रखने के लिए अब शहरीकरण के खिलाफ कार्यक्रम की शुरुआत की है। एक अनुमान के अनुसार, पिछले साल वहां उच्च शैक्षणिक योग्यता वाले 70 लाख लोग ग्रामीण इलाकों में गए, जिनमें से 60 फीसदी कृषि क्षेत्र में गए। देश में कृषि को मजबूत करने और ग्रामीण क्षेत्रों में अधोसंरचना बनाने की तुलना में अधिक रोजगार पैदा करने का कोई दूसरा विकल्प नहीं है, और इसी के साथ सार्वजनिक क्षेत्र में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के रूप में ज्यादा सामाजिक सुरक्षा देने की जरूरत है। पीएम-किसान योजना की शुरुआत के साथ किसानों को अतिरिक्त आय देने का पहला कदम पहले ही उठा लिया गया है।

जब अर्थशास्त्रियों ने बदलाव से इनकार कर दिया, तब राजनीतिक सोच ने परिपक्वता दिखाने की शुरुआत की। पहले राजग ने पीएम-किसान योजना की घोषणा की, उसके बाद कांग्रेस ने न्यूनतम आय योजना का चुनावी वादा किया, जो देश की सबसे निर्धन बीस फीसदी आबादी को छह हजार रुपये महीने देने का वादा करती है। स्पष्ट है कि राजनीतिक नेतृत्व आगे आर्थिक विकास का जो मार्ग देख रहा है, वह ज्यादा समावेशी है। दोनों पार्टियों ने अब वह समझना शुरू कर दिया है, जो मैं लंबे समय से कह रहा हूं कि अकेले कृषि क्षेत्र में अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने की क्षमता है।

अंतर्ध्वनि

>> चार्ल्स बुकोवस्की

लेखन न केवल मुक्त करता है, बल्कि सुखद भी है

***मैंने** पहली बार तेरह साल की उम्र में लिखना शुरू किया। इससे पहले मैंने अच्छी शिक्षा पाई थी। हां, मैंने कभी कॉलेज में पढ़ाई नहीं की। मैंने सैकड़ों नौकरियां कीं, खराब से खराब नौकरियां। जब मैं पैंतीस वर्ष का था, उस समय वर्षों से अत्यधिक शराब के सेवन के कारण मुझे भारी रक्तस्राव होने लगा। यह समझिए कि मैं लगभग मरणासन्न था। अस्पताल के लोगों ने मुझे खैराती वार्ड में डाल दिया और मेरे मरने की प्रतीक्षा करने लगे। लेकिन मैं मरा नहीं। मैं फिर से स्वस्थ हो गया।*

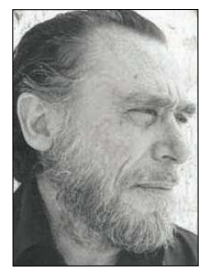

अस्पताल से बाहर निकल कर मैंने ट्रक ड्राइवर की नौकरी पाई और खाली समय में कविताएं लिखने लगा। वास्तव में पिछले दस वर्षों से मैंने लिखना छोड़ दिया था। मुझे नहीं पता था कि उन कविताओं को कहां भेजूं। मैंने बिना कुछ सोचे-समझे टैक्सास की एक पत्रिका को अपनी कविताएं भेज दीं। मुझे लगा कि ये कविताएं एक दिन लौट के आ जाएंगी और शायद कहीं प्रकाशित नहीं होंगी, लेकिन मुझे उस पत्रिका की संपादक का एक बड़ा सा पत्र मिला, जिसमें उसने मुझे प्रतिभावान व्यक्ति बताया था। बाद में वह मुझसे मिलने भी आई और हम दोनों ने शादी भी कर ली, लेकिन वह शादी ज्यादा दिनों तक नहीं चली। हम दोनों का तलाक हो गया और बाद में मैंने एक दूसरी महिला से शादी कर ली। हमारी एक बेटी भी है, जो प्रतिभाशाली है।

लोग जब कहते हैं कि लिखना बहुत दर्दनाक और कष्टकर है, तो मैं उनकी बात समझ नहीं पाता हूं, क्योंकि मेरी समझ से लेखन जाने-पहचाने पर्वत से लुढ़कने जैसा है। इसमें आनंद आता है। लेखन न केवल आपको मुक्त करता है, बल्कि सुखद भी है। यह एक तरह से उपहार है, क्योंकि आपको अपने मनचाहे काम के लिए पैसा भी मिलता है। मैं इसलिए लिखता हूं, क्योंकि इसके लिए मुझे अंदर से प्रेरणा मिलती है और बाद में पैसा भी।

-जर्मनी में जन्मे अमेरिकी कवि

मंजिलें और भी हैं

>> नगाराज गंगोल्ली

अपराधियों से लेकर नदियों तक को नवजीवन दिया

मैं बचपन से ही स्वतंत्र और उदार विचारों का रहा, जिसकी मुझे जब-तब कीमत भी चुकानी पड़ी। मैं स्कूल में कई बार ऐसे सवाल पूछने पर डांट खा चुका था, जो जायज तो थे, पर मेरे शिक्षकों के लिए असुविधाजनक थे। पंद्रह साल की उम्र में घर पर मेरी पिटाई हुई थी, क्योंकि मैं एक दलित लड़के के साथ घूम रहा था। बाद में मैं एचएमटी कंपनी में नौकरी करने लगा। पर दूसरों की बेहतरी की चिंता के कारण मैं अपनी नौकरी से संतुष्ट नहीं था। इसी सिलसिले में वर्ष 2004 में मैं आर्ट ऑफ लिविंग से जुड़ गया। यह जुड़ाव सिर्फ अपनी शांति के लिए नहीं था, बल्कि इसलिए था कि दूसरों की तकलीफें दूर कर सकूं। लोगों में बढ़ते गुस्से, ईर्ष्या भाव और घृणा को उनके स्वभाव से न जोड़कर वर्तमान जीवन स्थिति से जोड़ने का आइडिया मुझे आर्ट ऑफ लिविंग से मिला। चूंकि लोग मुझे जानते थे, इसलिए युवाओं, पुलिस के जवानों और अपराधियों तक को बदलने का अभियान मैंने शुरू कर दिया। अपनी इस मुहिम में मैं सफल भी हुआ। इस संदर्भ में मैं प्रवीण का उदाहरण दे सकता हूं। मांड्या का रहने वाला प्रवीण खूंखार अपराधी था और बंगलूरू के सभी थानों में उसके खिलाफ डकैती और चेन छीनने के मुकदमे दर्ज थे। अपराधियों को मुख्यधारा में लाने के लिए चलाए जा रहे एक वर्कशॉप में मेरी मुलाकात प्रवीण से हुई। मैंने उसे बदलने की ठानी और आज वह वेदवती नदी को नवजीवन देने के अलावा चिकमगलूर के जंगल में भूमिगत जल स्तर को बेहतर करने के अभियान में लगा है। प्रवीण में आए इस बदलाव से राज्य का पुलिस महकमा बहुत खुश है और वह मेरे अभियान को और व्यापक रूप देना चाहता है। कर्नाटक में किसानों की परेशानी दूर करने के लिए मैंने वेदवती और कुमुदवती नदियों के पुनरुद्धार अभियान पर न सिर्फ काम शुरू किया, बल्कि स्थानीय लोगों को भी इस अभियान से जोड़ा। अगर यह काम सफलतापूर्वक पूरा हो जाता है, तो बंगलूरू शहर में जल संकट का भी समाधान निकल सकता है। यही नहीं, इससे कावेरी के पानी को लेकर तमिलनाडु के साथ चल रहे पुराने विवाद का भी अंत हो जाएगा। इस काम की शुरुआत 2011 में तब हुई, जब मैं लक्ष्मीपुरा गांव के लगभग एक सौ किसान परिवारों के साथ जल संकट के समाधान की परियोजना पर काम कर रहा था। चूंकि वहां जल संकट के स्थायी और टिकाऊ समाधान पर वैज्ञानिक तरीके से काम हो रहा था, इसलिए हमें समाधान मिला और लक्ष्मीपुरा गांव तथा उसके आसपास के इलाकों में जल स्तर साढ़े तीन सौ फीट से अस्सी फीट पर आ गया। उसी दौरान मुझे यह भी समझ में आया कि अगर सही तरीके से काम हो, तो मानसून की कम बारिश के बावजूद पानी की कमी से निपटा जा सकता है। इस परियोजना में सफलता के बाद अब मैं जल संकट के समाधान की एक बड़ी परियोजना पर कुमुदवती रिवर बेसिन में काम कर रहा हूं, जो 1,097 गांवों, 24 ग्राम पंचायतों और 25 लाख लोगों के जीवन से जुड़ा है। यह नदी कभी 276 गांवों और बंगलूरू महानगर की प्यास बुझाती थी। लेकिन तीव्र शहरीकरण, जंगलों की कटाई, अवैध रेत खनन और यूकिलिप्टस के पेड़ लगाए जाने के कारण यह नदी धीरे-धीरे मर चुकी है। शुक्र है कि कर्नाटक में नदियों को नवजीवन देने के मेरे अभियान को सरकार और स्थानीय प्रशासन का सहयोग मिला है। जगह-जगह तालाब खोदे जा रहे हैं और वर्षा जल जमा कर भूमिगत जलस्तर को ऊपर उठाया जा रहा है।

मैंने नदियों के पुनरुद्धार पर न सिर्फ काम शुरु किया, बल्कि स्थानीय लोगों को भी इससे जोड़ा।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

नई जमीनें खोजता प्रेम

टीना डाबी के बाद कनिष्क कटारिया जैसे कामयाब युवाओं ने जो नजीरें पेश की हैं, उन्हें देखते हुए यह आस जगती है कि सहपाठियों-सहकर्मियों के बीच इधर लगभग मर चुके प्रेम को नए प्राण मिलेंगे और लड़कियों की जिंदगी को नई उम्मीदें बंधाएंगे।

मनीषा सिंह

अक्सर कहा जाता है कि आधे मन से किया गया गया कोई प्रयास कभी वह प्रभाव नहीं छोड़ता, जो पूरे मन से किया गया काम छोड़ता है। इधर जब आईआईटी, बॉम्बे से बीटेक पास राजस्थान के कनिष्क कटारिया ने सिविल सेवा परीक्षा-2018 में शीर्ष स्थान हासिल किया, तो एक सवाल के जवाब में उन्होंने इस सफलता का श्रेय अपने माता-पिता, बहन और प्रेमिका की मदद व नैतिक समर्थन को दिया। अपने माता-पिता और स्वजनों का स्मरण तो हर कोई ऐसे मौके पर करता है, पर खास तौर से प्रेयसी (गर्लफ्रेंड) को इसका श्रेय देने का दुस्साहस और आगे बढ़कर मौका पड़े, तो उससे शादी करने का प्रयास विरले ही कर पाते हैं। लेकिन कनिष्क ने पूरे मन से दोनों काम किए, करियर में आगे बढ़ने की पहल और प्रेम व उसका उद्घोष। इसीलिए जब उन्होंने प्रेमिका को अपनी सफलता का श्रेय देने का प्रयास किया, तो इससे जहां कुछ सवाल पैदा हुए वहीं कुछ उम्मीदें भी उस प्रेम को लेकर जगीं, जिसकी जमीनें इधर दहेज जैसे बंधनों ने बंजर कर दी हैं और करियर में सहयोगी से प्रेम को मीटू जैसे अभियानों की बदौलत आशंकाओं की अमरबेल खाने लगी है।

अगर यह कहें कि मजहब तक की दीवारें तोड़ करियर में सहयोगी के प्रेम को स्वीकारने और उसे निबाहने की इधर एक परंपरा कम से कम यूपीएससी की जमीन पर पैदा कुछ अंकुरों ने शुरू की है, तो शायद गलत नहीं होगी। एक किस्सा साल 2015 के यूपीएससी टॉपर टीना डाबी और दूसरे नंबर आए अतहर का है, जिन्होंने तीन साल चले प्रेम के बाद पिछले बरस पहलगाम में शादी रचाई थी।

वह दौर अपने देश में ज्यादा नहीं चला, जब कहा जाता था कि लड़कियों की अच्छी पढ़ाई-लिखाई और अच्छे करियर का मतलब यह है कि मां-बाप उनकी शादी को लेकर निश्चिंत हो सकते थे। कहा जाता था कि आईटी, बैंकिंग और प्रबंधन में अच्छी नौकरियां पाने वाली लड़कियों के विवाह में कोई दिक्कत नहीं आएगी और उन्हें दहेज जैसी समस्या का भी सामना नहीं करना पड़ेगा। माना गया कि पढ़ी-लिखी और अच्छे करियर में जाने वाली लड़कियों को या तो सहयोगियों के बीच से ही कोई योग्य जीवनसाथी मिल जाएगा या फिर जाति-समाज के बंधनों के बीच किए गए रिश्तों में उनकी शादी दहेज आदि झंझटों से मुक्त हो जाएगी। पर उम्मीदें जगाती इन धारणाओं के उस वक्त पुर्जे-पुर्जे हो गए, जब दहेज नई शक्लों में लौट आया। जैसे, सीधे-सीधे कैश या कार और महंगे तोहफों की मांग करने के बजाय लड़की के परिजनों से कहा जाने लगा कि शादी अगर किसी फाइव स्टार होटल में हो और डेस्टिनेशन वेडिंग जैसी भव्य साज-सज्जा वाली हो, तो बेहतर होगा। कुछ वर्ष पहले शादी कराने वाली एक मेट्रीमोनियल वेबसाइट (शादीडॉटकॉम) ने देश के 18 राज्यों में 30 हजार युवाओं में एक सर्वे कराया था, जिसमें दो-तिहाई (74 फीसदी) ने कहा था कि गर्लफ्रेंड-ब्वॉयफ्रेंड के इस जमाने में भी वे शादी अपने मां-बाप की मर्जी से यानी अरेंज्ड मैरिज करेंगे।

अरेंज्ड मैरिज क्यों? इस सवाल की तह में जाने से पता चला कि इसमें दान-दहेज की गुंजाइश बनती है। यह एक विडंबना ही है कि आज का जो युवा अपनी पढ़ाई-नौकरी से लेकर अपनी लाइफ स्टाइल तक में मां-बाप और समाज का दखल नहीं चाहता, वह शादी का मामला उठते ही अचानक रूढ़िवादी होने लगता है।

बेशक, ऐसी सारी मुश्किलों के बीच टीना डाबी के बाद कनिष्क कटारिया जैसे पढ़े-लिखे और कामयाबी का शीर्ष छूने वाले युवाओं ने जो नजीरें पेश की हैं, उन्हें देखते हुए यह आस जगती है कि सहपाठियों-सहकर्मियों के बीच इधर लगभग मर चुके प्रेम को नए प्राण मिलेंगे और ये अंकुर पल-बढ़कर तमाम आशंकाएं खारिज करते हुए खास तौर से लड़कियों की मुश्किल होती जिंदगी को नई उम्मीदें बंधाएंगे।

हरियाली और रास्ता

महिला, बूढ़ा व्यक्ति और हीरा

एक महिला की कहानी, जिसने एक बूढ़े को हीरा देकर जीवन के प्रति उसका नजरिया ही बदल दिया।

एक महिला समुद्र के किनारे रेत पर टहल रही थी। उसके चेहरे पर चमक और होठों पर मुस्कान थी। वहीं एक बूढ़ा व्यक्ति भी बैठा था। अचानक उस बूढ़े व्यक्ति ने देखा कि समुद्र की लहरों के साथ एक चमकदार पत्थर छोर पर आ गया। वह महिला उस चमकदार पत्थर के पास से गुजर रही थी। वह हीरा था। महिला ने वह पत्थर उठा लिया और अपने पर्स में रख लिया। फिर वह पहले की तरह रेत पर टहलने लगी। बूढ़ा व्यक्ति यह देख रहा था। अचानक वह अपनी जगह से उठकर महिला के सामने जाकर हाथ फैलाते हुए कहा, मैंने पिछले चार दिन से कुछ नहीं खाया है। क्या तुम मेरी मदद कर सकती हो? महिला अपना पर्स खोलकर खाने की कोई चीज ढूंढने लगी। उसने देखा बूढ़े की नजर उस पत्थर पर है। महिला ने वह पत्थर निकाला और बूढ़े को दे दिया। बूढ़ा हैरत में पड़ गया कि ऐसी कीमती चीज कोई भला इतनी आसानी से कैसे दे सकता है! इतने में औरत पलटकर वापस अपने रास्ते पर आगे बढ़ चुकी थी। हीरा देने के बावजूद उसके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी।

बूढ़े ने फिर उस औरत को रोका और कहा, क्या तुम जानती हो, जो चीज तुमने इतनी आसानी से मुझे दे दी, वह बेशकीमती हीरा है? इसे अपने पास रखकर तुम जिंदगी भर खुश रह सकती हो। महिला ने कहा, जी हां, मैं जानती हूं कि यह हीरा है। पर मेरी खुशी इस हीरे में नहीं, मेरे भीतर है। समुद्र की लहरों की तरह ही दौलत और शोहरत आती-जाती रहती है। अगर अपनी खुशी इनसे जोड़ेंगे, तो कभी खुश नहीं रह सकते। बूढ़े ने उस महिला को हीरा लौटाते हुए कहा, यह तुम रखो और मुझे इससे कई गुना ज्यादा कीमती वह भाव दे दो, जिसकी वजह से तुमने इतनी आसानी से यह हीरा मुझे दे दिया।

धन-दौलत में खुशियां ढूंढना बेकार है, खुशी हमारे अंदर होती है।

खुली खिड़की

शरणार्थियों की पनाहगाह

विभिन्न कारणों से निम्न एवं मध्य-आय वर्ग के देशों में अपने गृह देश से विस्थापित शरणार्थी सबसे ज्यादा रहते हैं। सबसे अधिक शरणार्थी तुर्की में रहते हैं, उसके बाद पाकिस्तान, युगांडा, लेबनान, ईरान जैसे देशों का स्थान है।

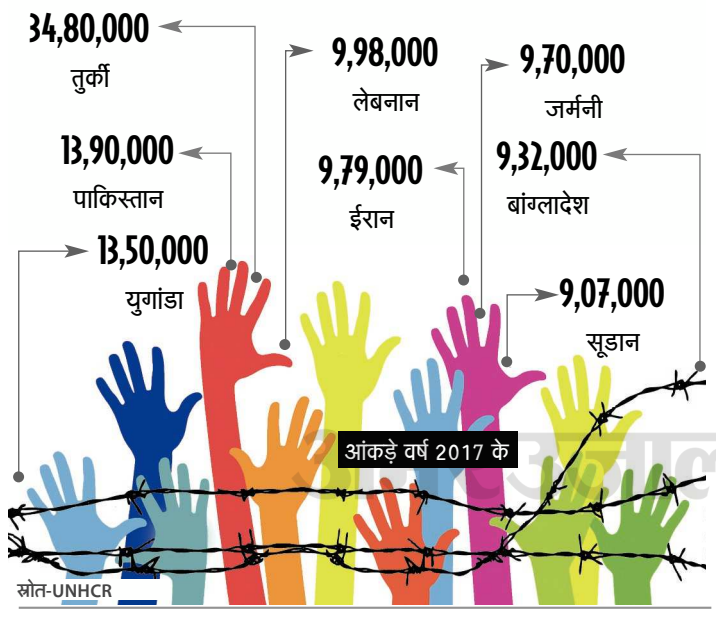

सुखी कौन है

एक व्यक्ति गुरु के पास जाकर बोला, गुरुदेव, दुख से छूटने का कोई उपाय बताइए। गुरु ने कहा, एक काम करो। जो आदमी सबसे सुखी है, उसके जूते लेकर आओ। मैं तुम्हें दुख से छूटने का उपाय बता दूंगा। शिष्य एक घर में गया और कहने लगा, भाई, आप बहुत सुखी लगते हैं। सिर्फ आज के लिए अपने जूते मुझे दे दीजिए। उसने कहा, आप तो कमाल करते हैं। अपने बदमाश पड़ोसी के कारण मैं बहुत परेशान हूं।

सत्संग

शिष्य ने दूसरे घर में जाकर एक हंसते-बोलते शख्स से उसका जूता मांगा, तो वह बोला, मेरे हंसने पर मत जाएं। मैं अपने रिश्तेदारों से बहुत परेशान रहता हूं। घर में भी शांति नहीं है। मैं तो साधु बन जाने के बारे में सोच रहा हूं। वहां से निकलकर वह कई घरों में गया, पर किसी ने जूता नहीं दिया। कोई कहता कि पत्नी से खटपट चलती है, तो कोई अपने कारोबार में मंदी के कारण दुखी था। दूसरों के जूते लाने के चक्कर में शिष्य का अपना जूता घिस गया, और उसका काम भी नहीं हुआ।

उसने शाम को लौटकर गुरुदेव को बताया, तो उन्होंने कहा, सुख चाहिए, तो दूसरे को नहीं, खुद को देखो। शिष्य नाराज होकर बोला, यह बात तो आप मुझे सुबह भी बता सकते थे। गुरुदेव बोले, मैं तुम्हें बताता, तो तुम्हें हजम नहीं होता। कई घरों के चक्कर लगाकर वह बात अब तुम्हें आसानी से समझ में आ गई होगी। शिष्य गुरु के कहने का मतलब समझ गया।

-संकलित